ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-I* Issue-VI* September-2016
Anthology : The Research

शास्त्रीय संगीत के अन्तर्गत ख़्यालगान

संजय दत्त
असिस्टेण्ट प्रोफेसर,
लोक कला विभाग,
हे0 न0 ब0ग0 वि0 वि0,
श्री नगर, उत्तराखण्ड

सारांश

ख़्याल 'फारसी' भाषाका शब्दहै। इसका अर्थ है–विचार या कल्पना। विशिष्ट नियमों का पालन करते हुए अपनी कल्पना व ज्ञान शक्ति के आधार पर राग का विशिष्ट प्रकार से आलाप व तानसहित विस्तार करना; ख़्यालगायन कहलाता है। आलाप, तान, बोलतान, बोल बंदिष तथा लोकधुन सभी का समावेश ख़्याल में है। उत्तर भारतीय प्रबुद्ध संगतमें ख़्याल एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण व लोकप्रिय गेयविधा के रूप में प्रतिष्ठत हैं। तुलसी राम देवांगन के अनुसारः–"कल्पना' ख़्याल शैलीकाप्राणहै।कल्पना के भावना का मनोहर सम्बन्ध स्थापित होने से अपूर्व आनन्द की सृष्टि होती है।"[1]

मुख्य शब्द : शास्त्रीय संगीत, ख़्यालगायन

प्रस्तावना

ख़्याल का अर्थ एवं परिभाषा

ख़्याल अरबी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ है–विचार, ध्यान कल्पना, तवज्जुह, प्रवृत्ति, भावना, ज़ज्ब, मत, राग, स्मृति, याद, संज्ञा, होश, संलग्नता, दुर्भावना, बदगुंमानी, भ्रम, बहम, अनुमान, अदाज और एक कविता। राग नियमों का पालन करते हुए गायक अपनी इच्छा से विविध आलाप व तानों द्वारा विस्तार करके जो गीत गाये जाते हैं, उनको ख़्याल कहा जाता है।मानक हिन्दी कोश के अनुसार ख़्याल के अर्थ ध्यान, चिंता, सोच–विचार, कल्पना, मत, विचार, लिहाज, याद, एक गानपद्धति, खेल तथा मज़ाक आदि हैं। हिन्दी मुहावराकोश के अनुसारः–"ख़्यालबांधना, कल्पनाकरना, ख़्यालमेंरहना, याद में रहना तथा ख़्यालराखना, दयादृष्टि रखना आदि है।[2] राजस्थानी शब्दकोष के अनुसार ख्यालआणो, ख्यालराखणो ख़्यालरहणों तथा अन्दाज आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है। डॉ. सुभद्राचौधरी के अनुसारः–"बिहार में विवाह के अवसर पर झुमरा जैसे तालों में गाए जाने वाले गीतों को ख़्याल कहा जाता है और शास्त्रीय संगीतमेंप्रचलित ख्यालोंमेंभीविवाहप्रसंग के गीतों की भरमार है।"[3]

ख़्याल का उद्‌गम एवं विकास

छनद, प्रबन्ध, ध्रुपद व कव्वाली आदि का प्रभाव ख़्याल की उत्पत्ति हुई। कुछ विद्वानों का कहना है कि ख़्याल की उत्पत्ति ध्रुपद से हुई जबकि कुछ मानते हैं की उत्पत्ति हुई। कुछ विद्वानों का कहना है कि ख़्याल की उत्पत्ति ध्रुपद से हुई जबकि कुछ मानते हैं कि ध्रुपद तथा कव्वाली से हुई है। इसके अतिरिक्त कुछ विद्वान साधारणी गीति को इसका आधार मानते हैं। इस प्रकार अनेक विद्वानों के भिन्नमत हैं। कुछ विद्वानों के अनुसार 14 वीं शताब्दी में अमीर खुसरो ने भारतीय संगीत में ईरानी संगीत का मिश्रण करके अपनी कल्पना से ख़्याल शैली का आविष्कार किया।[4] इस विषय में डॉ. लाल मणि मिश्र कहते हैं कि अमीर खुसरो की मज़ार पर प्रतिवर्ष उसका आयोजन बहुत पहले से होता चला आया है, जहाँ कव्वालियाँ गायी जाती हैं। मज़ार जिस व्यक्ति की होती है, उसकीपसन्द के अनुसार ही विभिन्न कार्यक्रमों अथवा विधाओं का आयोजन होता है। तानसेन की कब्र पर आजभी ध्रुपद गान का नियमित रूप से आयोजन होता है, भले ही उसके बाद ख़्याल तथा ठुमरी आदि भी गा ली जाएं। यदि अमीर खुसरो ने ख़्याल का आविष्कार किया होता तो उनके सम्मान में निश्चय ही ख़्यालगान का ही आयोजन होता।[5]

डॉ. समर बहादुर सिंह ख़्याल का उद्‌गम 'रूपक' से मानते हैं।[6] रूपक में भावों को प्रकट करना ही विशेष अर्थ रखता है। भावों को प्रकट करने के लिए ही गायक जो भी स्वर, लय या गमक आदि प्रयुक्त करना चाहता था, अपनीकल्पना के आधारपरभावों के अनुसारप्रयुक्तकरसकताथा। यही शैली आगे चलकर ख़्यालगायन शैली आधुनिक युग की प्रसिद्ध गायन शैली है। ध्रुपद गायन शैली के लोप होने के कारण धीरे–धीरे ख़्यालगायन शैली का प्रचार हुआ।

ख़्याल के भेद

ख़्यालगायन को लय अथवा गायन के क्रम, परम्परा और विधि के आधार पर तीन प्रकार से गाया जाता है–बिलम्बित ख़्याल, मध्यलय के ख़्याल तथा द्रुतलय के ख़्याल। किन्तु आधुनिक समय में मध्य लय के ख़्याल का प्रचार कम हो गया है।अतः विलम्बित ख़्याल के पश्चात् द्रुत ख़्याल ही अधिकतर गाया जाता है।[7]

ख़्यालगायन की विधि

सुधा श्रीवास्तव के अनुसार

"ख़्यालगायन शैली में बड़े और छोटे ख़्याल दोनों गीत प्रकारों का समावेश करने से श्रोता को राग के सम्पूर्ण दर्शन हो जाते हैं।"[8] ख़्यालगायन का प्रारम्भ करने की दो शेलियाँ प्रचलित हैं–प्रथम में ख़्याल की बन्दिश शुरू करने से पहले राग के स्वरूप का आलाप ध्रुपद के नोम्–तोम् के ढंग ही विस्तार पूर्वक किया जाता है।दूसरी शैली में राग के स्वरूप को स्थापित करने के लिए अकारादि में अत्यन्त संक्षिप्त आलाप किया जाता है। दूसरी शैली के प्रयोक्ताओं का तर्क यह है कि ख़्याल की विशेषता बन्दिश गाने के बाद किए जाने वाले अत्यन्त विस्तृत आलापादि में ही है। पहले विस्तृत 'नोम्–तोम् करके बन्दिश्ज्ञ गाने के बाद फिर से आलाप करने से पुनरावृति का दोष उत्पन्न होता है। परिणाम स्वरूप श्रोताओं में अरूचि का भाव उत्पन्न हो जाता है। इसलिए प्रारम्भ में उतना ही आलाप करना चाहिए, जिससे राग का स्वरूप व्यक्त हो जाए।[9] ख़्याल में ध्रुपद की तुलना में लचीली गायिकी है। इसमें गायक स्वतन्त्र रूप से विचरण कर सकता है। गायक अपनी गायकी में खटके, मींड, मुर्की, कण तथा गमक आदि का प्रयोग सफलतापूर्वक करता है। अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण ख़्याल शैली आधुनिक समय में ध्रुपद ही नहीं अन्य सभी गायन शैलियों से अधिक लोकप्रिय शैली बन गई है। भारतीय शास्त्रीय संगीत में वर्तमान समय में ख़्याल का इतना महत्त्व है कि साधारणजन की तोबात ही क्या? संगीत से जुड़े हुए आम लोगों को भी ख़्याल और शास्त्रीय संगीत मे कोई भेद नज़र नहीं आता।[10]

उद्देश्य

संगीत में राग का उद्देश्य ही कल्पना द्वारा रस निर्माण करना है।संगीतात्मक आनन्द और निर्माण क्षमता कल्पना शक्ति की देन है।

निष्कर्ष

अतः ख़्यालगायन शैली गायक की सांगीतिक प्रतिभा के साथ–साथ सुन्दर कल्पना शक्ति की भी अपेक्षा रखती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. तुलसीदास देवांगन, ख्यालनामकरण पर भारतीय प्रभाव ख्याल अंक जनवरी–फरवरी 1976 पृ 23
2. डॉ मधुबाला सक्शैना ख्याल शैली का विकास पृ 3
3. डॉ सुभद्रा चौधरी ख्याल के निबद्ध और अनिबद्ध का विश्लेषण संगीत ख्याल अंक जनवरी/फरवरी 1976 पृ 8
4. नन्द राम चतुर्वेदी भारत में संगीत शिक्षा वाद्य पृ 123
5. डॉ लालमणि मिश्र, भारतीय संगी वाद्य पृ 123
6. डॉ समरबहादुर सिंह ख्याली दुनिया की उपज ख्याल संगीत मई 1965 पृ 31
7. डॉ मधुबाला सक्सैना ख्याल शैली का विकास पृ 96
8. सुधा श्री वास्तव भारतीय संगीत के मूलाधार पृ 126–127
9. डॉ सुभद्रा चौधरी वही पृ0 1
10. वही पृ 12